हिंदी भवन संदेश

(हिंदी प्रचारिणी सभा का सूचना-पत्र)

हिंदी भवन – लोंग माउंटेन

Website: hindipracharinisabha.com --- Email: hindipracharinisabha@hotmail.com

वर्ष 5 अंक 12 जुलाई 2014

–भाषा गई तो संस्कृति गई –

संपादक / टंकन / सज्जा : यन्तुदेव बुधु

सम्पादकीय

'हिंदी बोलो' अभियान !

हिंदी प्रचारिणी सभा द्वारा हिंदी बोलो अभियान कई वर्षों से चलाया जा रहा है । हिंदी भाषा का पढ़ना-पढ़ाना और बोलना तथा दूसरों से बुलवाने का अभियान अब भी जारी है। हिंदी भाषा का प्रचार तो जारी है ही, पर आज स्थिति ऐसी हो गई है कि हिंदी बहुत कम लोगों को बोलते हुए सुनते हैं। घर में, सड़क पर, बस में, स्कूल में, यहाँ तक कि हिंदी की कक्षा में भी छात्र क्रियोली ही बोलते हैं। मतलब रात-दिन, उठते-बैठते केवल क्रियोली ही रटी जा रही है। कक्षा के अध्यापक भी आजकल छात्रों से क्रियोली में वार्तालाप करने लग गए हैं । तो फिर हिंदी भाषा का उत्थान कैसे संभव होगा ?

हमारा विनम्र निवेदन उन शिक्षकों से है जो छात्रों को हिंदी सिखाते हैं । कम से कम अपनी हिंदी की कक्षा में अपने छात्रों से हिंदी में वार्तालाप करें । भले ही आपसे बच्चे क्रियोली बोलें लेकिन आप उन्हें उत्तर हिंदी में देने की कोशिश कीजिए । ऐसी बात नहीं है कि बच्चे आपकी बात नहीं समझेंगे । वे तो हिंदी फिल्में देखना पसंद करते हैं और अच्छी तरह समझ लेते हैं । तो फिर क्या वे आपकी हिंदी नहीं समझेंगे ? वे आप की हिंदी ज़रूर समझेंगे । इससे छात्रों को हिंदी बोलने का प्रोत्साहन मिलेगा । आप कोशिश कीजिए हम आपके साथ हैं ।

यन्तुदेव बुधु

प्रधान-हिंदी प्रचारिणी सभा

इस अंक में पढ़िए :

- कार्यशाला 2014 पृ –2
- कविता वाचन प्रतियोगिता 2014 पृ –2
- इतिहास के पन्नों से पृ –2
- पुस्तकालय के लिए नया कर्मचारी पृ –3
- विद्यालय के लिए नयी व्यवस्थापिका पृ –3
- चित्रावली पृ –3
- स्थापना दिवस 2014 पृ –4

सम्मेलन-परीक्षा फल 2013

2013 के सम्मेलन-परीक्षाओं का फल अप्रैल 2014 के प्रथम सप्ताह में डाक द्वारा प्राप्त हुआ । कार्य-कारिणी समिति ने इसकी जानकारी ली तथा परीक्षाओं में प्रथम दस की श्रेणी में स्थान प्राप्तकरने वालों की सूची तैयार की गयी तथा इसको औपचारिक किया गया । परीक्षा-फल परीक्षार्थियों को भेजने का काम सभा के कर्मचारियों को सौंपा गया । परीक्षा-फल जल्द प्रेषित करने का आदेश दिया गया ।

परीक्षा के नतीजे इस प्रकार हैं :-

कक्षा :	**परिचय**	**प्रथमा**	**मध्यमा**	**उत्तमा**	**उत्तमा**	**उत्तमा**
सम्मिलित :	624	473	308	217	163	178
उत्तीर्ण % :	90	89.4	96.4	95	87.6	91.6

छात्रों को परीक्षा-फल प्रेषित कर दिये गये हैं । हिंदी साहित्य सम्मेलन से प्रमाण पत्र भी आ गये हैं जो कि अगले हिंदी दिवस के अवसर पर वितरित किये जाएँगे , साथ में प्रथम दस की श्रेणी में आने वालों को पुरस्कृत किये जाएँगे । ■

कार्यशाला 2014

बैठकाओं तथा सप्ताहांत स्कूलों की प्राथमिक कक्षाओं के शिक्षकों के लिए सभा द्वारा एक एकदिवसीय कार्यशाला का आयोजन हुआ था। यह कार्यशाला तीन स्थानों में तथा प्रांतीय स्तर पर आयोजित हुई थी। ता. 5 अप्रैल को क्यूर्पिप के मॉरीशस कालेज में , 12 अप्रैल को फ्लाक के मोडर्न कालेज में , 19 अप्रैल को कात्र बोर्न के ल्वी नेलाँ सरकारी स्कूल में तथा अंतिम कार्यशाला 5 मई को हिंदी भवन में आयोजित हुई थी जिनमें कुल 82 शिक्षकों ने भाग लिया।

यह कार्यशाला 'हिंदी सुगम हिंदी भाग VI' पर आधारित रही। माताबदल जी द्वारा शिक्षकों को इसी पुस्तक के पाठों की जानकारी दी गयी जिनमें कई महापुरुषों तथा हिंदी सेवकों के बारे में जानकारी है। रामदीन जी ने सुगम हिंदी के अभ्यास कार्यों पर बात की। मंत्री शम्भु जी ने सुगम हिंदी के प्रयोग की सार्थकता पर प्रकाश डाला। इस कार्यशाला से शिक्षकगण ज़रूर लाभांवित हुए होंगे। ■

.....

कविता वाचन प्रतियोगिता –2014

वर्ष 2014 की कविता वाचन प्रतियोगिता का प्रथम चरण 17 मई को तीन केंद्रों में कुशलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। उन तीन केंद्रों केनाम इस प्रकार हैं :– हिंदी भवन–लोंग माउंटेन, मॉरीशस कालेज –क्यूर्पिप तथा मोर्डन कालेज–सेंट्रल फ्लाक।

इस वर्ष 82 प्रतियोगियों ने भाग लिया, जिनमें अंतिम चरण के लिए 10 बढ़िया कविताएँ चुनी गयी। कविता वाचन प्रतियोगिता का अंतिम चरण 14 जून को हिंदी भवन में हुआ, जिसका नतीजा इस प्रकार है : प्रथम स्थान पर – धानिश्ता तिंगरिया, दूसरे स्थान पर– अदिति किसुना और तीसरे स्थान पर– यजना सलतू तथा चौथा स्थान बाकी सात प्रतियोगियों को दिया गया जिनके नाम इस प्रकार हैं :– दिव्या भगन, नेहाल बिसेसर, हर्ष शर्मा, ऋषिका राय, तासवी उजूधा, विद्या गोपी तथा धासवानी ग्रुदोयाल।

कविता वाचन प्रतियोगिता के पुरस्कार इस प्रकार सभा द्वारा निर्धारित हैं। प्रथम – 3000 रुपये, द्विवीय 2000 रुपये, तृतीय 1000 रुपये तथा बाकी सात प्रतियोगियों के लिए 500 रुपये। इस वर्ष से प्रथम विजेता को साथ में श्रीमती रोशनी द्वारा एक शिल्ड भी दिया जा रहा है । हम सभा की ओर से श्रीमती रोशनी की उदारता पर आभार प्रकट करते हैं। ■

इतिहास के पन्नों से .....

रात के समय भारतीय मजदूर सत्संग के लिए बैठे हुए।

बैठकों का महत्व

मॉरीशस में बैठक भरतीय गिरमिटिया मजदूरों का एक केंद्र थी। वहाँ प्रायः एक समुदाय के सभी लोग उसके सदस्य होते थे और वे अपने ही बीच से किसी को प्रधान, मंत्री और कोषाध्यक्ष नियुक्त करके कार्य–संचालन करते थे। वहाँ किसी सदस्य की घरेलू समस्या के साथ–साथ सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक और नैतिक आदि विषयों पर बातचीत होती थी। हर व्यक्ति का उद्देश्य अपने सहयोगी की सहायता करना था। संक्षेप में बैठकों का कार्यक्रम इस प्रकार होता था – 1. सामाजिक जुटाव 2. सांस्कृतिक और धार्मिक समारोह 3. शिक्षा 4. आपत्तिकाल में सहयोग 5. मंगल कार्य के लिए सहयोग। बैठकों ने भारतीय उत्सवों की परम्परा को बनाए रखा। लोग उन्हीं स्थानों में सामूहिक रूप से होली या दिवाली मनाते थे। इस प्रकार धार्मिक विचारों का प्रचार होता था। बैठकों में हिंदी सिखाई जाती थी। अगर बैठका की स्थापना न हुई होती तो हिंदी भाषा का उचित प्रचार नहीं हो पाता। इसी के द्वारा भारतीय मजदूरों में एकता पैदा हुई। बैठक ही उस एकता का प्रतीक थी।

वे पढ़े–लिखे नहीं थे। पर उन्हें पता था कि भारतीय संस्कृति और हिन्दू–धर्म की रक्षा के लिए मंदिर की स्थापना आवश्यक है। इस तरह वे मजदूर अनेक स्थानों में मंदिर बनवाकर धार्मिक समारोहों का आयोजन करने लगे। वे अपनी परम्परागत में पोशाक में ही पूजा और सत्संग के लिए मंदिर जाते थे। भोजपुरी के साथ–साथ हिंदी भी उनकी भाषा बन गई क्योंकि पुरोहित लोग हिंदी में ही भाषण करते थे। भजन–कीर्तन के लिए भी हिंदी भाषा का प्रयोग किया जाने लगा। इस तरह हिंदी भाषा का पठन–पाठन बैठकों में शुरू हुआ। ■

पुस्तकालय के लिए नया कर्मचारी

श्रीमती आरती सलाबी

वर्ष 2014 के जनवरी महीने से सभा के नेम नारायण गुप्त पुस्तकालय के कार्यों को संभालने के लिए सोमोरी जी के स्थान पर श्रीमती आरती सलाबी को नियुक्त किया गया है। पुराने कर्मचारी सोमोरी जी को हम सभा की ओर से उनकी सेवा के लिए आभार प्रकट करते हैं। पुस्तकालय को नये तरीके से व्यवस्थित करने के लिए तथा वहाँ पर कंप्यूटीकरण लाने के लिए यह कदम उठाना ज़रूरी था।

पुस्तकालय में छात्रों की सुविधा के लिए कई तरह के नये कदम उठाये गए हैं। जैसे – स्थानीय एवं भारतीय साहित्यकारों की अलग–अलग सूची तैयार करना, उनकी रचनाओं की सूची भी अलग से होगी ताकि पुस्तकालय में उपलब्ध पुस्तकें ढूँढना सहज होगा। इन सब की जानकारी कंप्यूटर पर उपलब्ध होगा। इस तरह वहाँ खोजपूर्ण कार्य करना आसान हो जाएगा।

पुस्तकालय को समृद्ध बनाने के लिए इस वर्ष के फरवरी महीने में हमने भारत से बड़ी संख्या में पुस्तकें मँगवायी हैं जिनमें अनेक तरह की, तथा अनेक स्तर की भी पुस्तकें पायी जाती हैं। हमें आशा है कि छात्र तथा शिक्षक भी इनसे लाभांवित होंगे। ■

हिंदी भवन विद्यालय की नई व्यवस्थापिका

श्रीमती कामिनी रघुबर

हिंदी भवन विद्यालय के व्यवस्थापक लक्ष्मीप्रसाद मंगरू जी ने दिसम्बर 2013 में स्वास्थ्य ठीक न होने के कारण अपना त्यागपत्र दे दिया। हम सभा की ओर से मंगरू जी की सेवा के लिए उनको आभार प्रकट करते हैं और उनके अच्छे स्वास्थ्य की कामना करते हैं।

सभा की कार्यकारिणी समिति ने श्रीमती कामिनी रघुबर को जनवरी से हिंदी भवन विद्यालय की नयी व्यवस्थापिका नियुक्त किया। हम सभा की ओर से कामिनी जी को उनके नये पद के लिए बधाई देते हैं और इस कार्य को अच्छी तरह सम्भालने की शुभकामना देते हैं।

हिंदी भवन विद्यालय में कुछ वर्षों से माध्यमिक कक्षाओं के साथ–साथ प्राथमिक कक्षाओं की भी पढ़ाई चल रही है। यहाँ पर जगह की कमी होने के कारण कई वर्षों से प्रवेशिका तथा परिचय की कक्षाएँ गाँव की महावीर फुगआ सरकारी पाठशाला में पढ़ाई जा रही है। वहाँ पर वर्तमान में तीन अध्यापक संलग्न हैं। ■

चित्रावली : स्थापना दिवस 2014 के कुछ चित्र

सभा के मुख्य दाता की प्रतिमा के सामने सभा के सदस्य श्रीमती अंजली के साथ।

छात्रा झोरी गोष्ठी में भाग लेती हुई।

छात्रा ईसर साहित्यकार 'प्रेमचन्द' पर बात करती हुई।

श्रीमती अंजली चिंतामणि छात्रों को संबोधित करती हुई।

स्थापना दिवस 2014

हिंदी प्रचारिणी सभा की स्थापना 12 जून 1926 को धारा नगरी (लोंग माउंटेन) में हुई थी। सभा अपने उन दाताओं को श्रद्धांजलि पेश करने के लिए हर वर्ष यह दिवस मनाती है। इस वर्ष हिंदी प्रचारिणी सभा का स्थापना दिवस 14 जून 2014 को सभा के सुरुज प्रसाद मंगर भगत सभागार में भव्य रूप से मनाया गया। इस अवसर पर दो कार्यक्रम रखे गए थे। कार्यक्रम शुरू करने से पहले छात्रों द्वारा सभा के मुख्यदाता श्री रामदास रामलखन (गिरधारी भगत) की प्रतिमा को एक पुष्प माला पेश की गयी। वह प्रतिमा सभा-भवन के सामने स्थित है।

हमेशा की तरह स्थापना दिवस छात्रों का कार्यक्रम होता है और इस अवसर पर किसी साहित्यकार पर छात्र तैयारियाँ करते हैं और अपनी तैयारियाँ प्रस्तुत करते हैं। इस बार साहित्यकार 'प्रेमचन्द' का नाम प्रस्तावित हुआ था। हमेशा गोष्ठी का संचालन हिंदी भवन विद्यालय में पढ़ने वाला एक छात्र ही करता है। कार्यक्रम में एक मुख्य वक्ता को सभा आमंत्रित करती है। इस वर्ष महात्मा गांधी संस्थान की व्याख्याता श्रीमती अंजली चिंतामणि ने सभा का अमंत्रण स्वीकार किया। हम अंजली जी को आभार प्रकट करते हैं।

गोष्ठी 11.00 बजे शुरू हुई और लगभग डेढ़ घण्टे तक चली। छात्रों ने बारी बारी से प्रेमचन्द पर अपनी-अपनी तैयारियाँ प्रस्तुत कीं। छात्रा कुमारी झावरी ने बड़ी खूबी से गोष्ठी की प्रस्तुति की। छात्रों ने साहित्यकार प्रेमचन्द की जीवनी तथा उनकी अनेक कहानियों पर टिपणी की। अंत में श्रीमती अंजली चिंतामणि ने प्रेमचन्द पर अपना विचार दिया जिसे छात्रों ने बड़े ध्यान से सुना। उन्होंने उपस्थित छात्रों को प्रेमचन्द की कहानियों में सत्यं, शिवम् , सुन्दरम् होने का एहसास दिलाया और बड़ी खूबी से प्रेमचन्द पर अनेक बातें बतायीं। इससे छात्र ज़रूर लाभांवित हुए होंगे।

स्थापना दिवस के अवसर पर दूसरा कार्यक्रम कवि-सम्मेलन रखा गया था जो डेढ़ बजे शुरू हुआ और लगभग साढ़े तीन बजे समाप्त हुआ। हमारे देश के एक से बढ़कर एक कवि हिंदी भवन के प्रांगण में पधारे थे। जो हिंदी ज्ञान की गंगा धारा नगरी में 1926 में बही थी और पूरे देश में फैली यह उसी का नतीजा है कि आज हमारे देश में इतने उच्च कोटि के साहित्यकार हुए हैं। स्थानीय कवियों में प्रचलित कवियों के अलावा कुछ नये उभरते कवि भी मौजूद थे।

इस अवसर की अध्यक्षता का पद विश्व हिंदी सचिवालय के कार्यवाहक महासचिव श्री गंगाधरसिंह सुखलाल संभाल रहे थे। उत्सव की शोभा में चार चाँद लगाने के लिए मुख्य अतिथि, भारतीय उच्चायोग के शिक्षा एवं भाषा विभाग के द्वितीय सचिव श्री मीमांसक जी थे। भोजपुरी संगठन की डॉ. श्रीमती सरिता बुद्धू तथा हिंदी संगठन की मंत्री श्रीमती अंजू घरभरण भी उपस्थत रहीं। सभागार में अनेकों साहित्यकार उपस्थित थे जिनमें देश के वरिष्ठ साहित्यकार श्री रामदेव धुरंधर भी थे। डॉ. राजरानी गोबिन, डॉ. हेमराज सुन्दर तथा लेखक संघ के प्रधान श्री इन्द्रदेव भोला इन्द्रनाथ तथा कई अन्य लेखक ,कवि एवं श्रोतागण इस कवि सम्मेलन में उपस्थित रहे। महात्मा गांधी संस्थान के सृजनात्मक लेखन एवं प्रकाशन विभाग के श्री राज हीरामन कवि सम्मेलन का संचालन कर रहे थे।

राज जी कवि सम्लेलन का संचालन बड़े जोश के साथ कर रहे थे। कवियों का हौसला बढ़ाने के लिए वे बीच-बीच में अपनी कुछ क्षणिकाएँ भी सुना देते थे इससे श्रोता और प्रभावित हो जाते थे। बारी-बारी से कवि अपनी-अपनी कविताएँ सुनाते गए जिनमें हमें नये कवियों की कविताएँ भी सुनने का मौका प्राप्त हुआ। नये कवियों तथा नई कवियित्रियों को सुनकर लोगों ने उनकी बहुत प्रशंसा की। उन्हें सुनकर राज जी ने तो यह भी कहा कि मॉरीशस में हिंदी का भविष्य तथा साहित्य सुरक्षित है। इसमें हमें चिंता करने की ज़रूरत नहीं।

कार्यक्रम के अंत में श्री मीमांसक ने कुछ शब्दों में अपने विचार दिये। श्री सुखलाल जी ने साहित्यकार श्रीमती भानुमती नागदान तथा श्री पुजानन्द नेमा को श्रद्धांजलि अर्पित की। उन्होंने यह भी सुझाव दिया कि ऐसा आयोजन वार्षिक होना चाहिए तथा कविताओं का संकलन एवं प्रकाशन भी होना चाहिए। फिर उन्होंने स्थानीय कविताओं पर कुछ प्रकाश डाला तथा अपनी एक सुन्दर कविता सुनायी। अंत में अपने समापन-यक्तव्य में हिंदी प्रचारिणी सभा के प्रधान श्री बुधु ने साहित्यकारों , श्रोताओं एवं उपस्थित अतिथियों के प्रति आभार प्रकट किया तथा शांति-पाठ के साथ कवि सम्मेलन का विसर्जन हुआ। ■